

॥ हनुमान् चालीसा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुर सुधार।
बरनऊँ रघुवर विमल यश
जो दायकु फल चार॥

बुद्धिहीन तनु जानिके
सुमिरौ पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं
हरहु कलेस विकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥ १ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा।
अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥ २ ॥

महावीर विक्रम बजरङ्गी।
कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥ ३ ॥

कञ्चन बरन विराज सुवेसा।
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा॥ ४ ॥

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५ ॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन।
तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६ ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥ ७ ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ ८ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लङ्क जरावा॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ १० ॥

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥ ११ ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥ १२ ॥

सहस वदन तुम्हरो यश गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीशा॥ १४ ॥

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।
लङ्केश्वर भये सब जग जाना॥ १७ ॥

युग सहस्र योजन पर भानु।
 लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८ ॥
 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
 जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥ १९ ॥
 दुर्गम काज जगत के जेते।
 सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ २० ॥
 राम दुआरे तुम रखवारे।
 होत न आझा बिन पैसारे॥ २१ ॥
 सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
 तुम रक्षक काहू को डर ना॥ २२ ॥
 आपन तेज सम्हारो आपै।
 तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ २३ ॥
 भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
 महावीर जब नाम सुनावै॥ २४ ॥
 राम लक्ष्मण जानकी।
 जय बोलो हनुमान् की॥
 नाशै रोग हरै सब पीरा।
 जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥ २५ ॥
 सङ्कट से हनुमान् छुडावै।
 मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥ २६ ॥
 सब पर राम तपस्वी राजा।
 तिन के काज सकल तुम साजा॥ २७ ॥
 और मनोरथ जो कोई लावै।
 दासु अमित जीवन फल पावै॥ २८ ॥
 चारों युग प्रताप तुम्हारा।
 है प्रसिद्ध जगत उजियारा॥ २९ ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे।
 असुर निकन्दन राम दुलारे॥ ३० ॥
 अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
 अस बर दीन जानकी माता॥ ३१ ॥
 राम रसायन तुम्हरे पासा।
 सदा रहो रघुपति के दासा॥ ३२ ॥
 राम लक्ष्मण जानकी।
 जय बोलो हनुमान् की॥
 तुम्हरे भजन राम को पावै।
 जन्म जन्म के दुख बिसरावै॥ ३३ ॥
 अन्त काल रघुपति पुर जाई।
 जहाँ जन्मि हरिभक्त कहाई॥ ३४ ॥
 और देवता चित्त न धरई।
 हनुमत सेई सर्व सुख करई॥ ३५ ॥
 सङ्कट कटै मिटै सब पीरा।
 जो सुमिरै हनुमत बलवीरा॥ ३६ ॥
 जै जै जै हनुमान गोसाईं।
 कृपा करहु गुरु देव की नाई॥ ३७ ॥
 यह शत पार पाठ कर कोई।
 छूटहि बंदि महा सुख होई॥ ३८ ॥
 यो यह पढ़ै हनुमान् चलीसा।
 होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ ३९ ॥
 तुलसीदास सदा हरि चेरा।
 कीजै नाथ हृदय मैं डेरा॥ ४० ॥
 राम लक्ष्मण जानकी।
 जय बोलो हनुमान् की॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:
http://stotrasamhita.net/wiki/Hanuman_Chalisa.



generated on **January 19, 2025**

Downloaded from <http://stotrasamhita.github.io> | StotraSamhita | [Credits](#)